व्यक्तित्व के प्रकार

प्रारम्भ में हिपोक्रेट्स (460-370 ई.पू.) ने व्यक्तित्व का विभाजन चार भागों में किया। क्रोधी अथवा पित्त प्रकृति, आशावादी, भावशून्य तथा विषादी अथवा उदासीन। हिपोक्रेट्स ने व्यक्तित्व का यह विभाजन शरीर के द्रवों के आधार पर किया है। उनका मानना था कि शरीर में पाए जाने वाले चार द्रव हैं— पीला पित्त, काला पित्त, रक्त तथा कफ। जिस व्यक्ति में जिस द्रव की प्रधानता होती है उसमें उसी प्रकार का व्यक्तित्व होता है। पीला पित्त की प्रधानता वाले व्यक्ति क्रोधी, रक्त की प्रधानता वाले व्यक्ति आशावादी, कफ की प्रधानता वाले व्यक्ति भावशून्य, क्षुब्ध एवं काला पित्त प्रधानता वाले व्यक्ति उदासीन होते हैं।

युंग ने व्यक्तित्व के दो प्रकार बताए हैं— (i) अन्तर्मुखी (ii) बहिर्मुखी अन्तर्मुखी व्यक्ति दूसरों से अलग एवं आत्म केन्द्रित होता है। ऐसे व्यक्ति आदर्शवादी होते हैं। ऐसे व्यक्ति दूसरों से मिलने जुलने में हिचकिचाते हैं।

बहिर्मुखी व्यक्ति समाज में एक-दूसरे से मिलना जुलना पसन्द करते हैं। ऐसे लोग सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। इनकी अभिरुचि बाह्य जगत की घटनाओं पर बहुत अधिक होती है। बाद में युंग के इन दोनों प्रकारों की आलोचना होने लगी। आलोचकों का कहना

है कि अधिकतर लोगों में दोनों प्रकार का गुण होता है, एक व्यक्ति किसी परिस्थिति में अन्तर्मुखी का व्यक्तित्व प्रदर्शित करता है तो वही व्यक्ति दूसरे परिस्थिति में बहिर्मुखी व्यक्तित्व जैसा व्यवहार करता है। आधुनिक मनोवैज्ञानिक ने ऐसे व्यक्तित्व को उभयमुखी व्यक्तित्व की संज्ञा दी है।

क्रेशमर ने शारीरिक गुणों के आधार पर व्यक्तित्व को चार भागों में विभाजित किया है:- कृशकाय, पुष्टकाय, स्थूलकाय एवं विशालकाय।

लम्बे और दुबले-पतले व्यक्ति को क्रेशमर ने कृशकाय की श्रेणी में रखा है।

जिन व्यक्तियों की लम्बाई एवं मोटाई संतुलित होती है अर्थात वो सुडौल एवं सुविकसित होते हैं उन्हें पुष्टकाय की श्रेणी में रखा गया है।

ऐसे व्यक्ति जिसकी लम्बाई कम होती है एवं वजन भी लम्बाई की तुलना में अधिक अर्थात मोटे होते हैं हाथ पैर छोटे छोटे होते हैं क्रेशमर ने उन्हें स्थूलकाय व्यक्तित्व का कहा है।

क्रेशमर ने विशालकाय में ऐसे लोगों को रखा है जिसमें विभिन्न

Date
Page

प्रकार के लक्षण होते है एवं उपरोक्त तीन श्रेणियों के मिले जुले गुण होते है।

शारीरिक गठन के आधार पर शेल्डन ने व्यक्तित्व को तीन भागों में विभाजित किया है।

i) एण्डोमार्फी — शेल्डन के अनुसार जिनका शरीर नाटा, गोल एवं मोटा होता है। अर्थात यह क्रेश्मर के स्थूलकाय से मिलता जुलता है।

ii) एक्टोमार्फी — ये व्यक्ति लम्बे, दुबले-पतले होते है। इनकी हड्डियाँ लम्बी-लम्बी होती है। क्रेश्मर के कृशकाय से मिलते है।

iii) मेसोमर्फी — मेसोमर्फी में शेल्डन ने ऐसे व्यक्ति को रखा है जिसका शरीर वजन लम्बाई के अनुसार होता है। ये सुडौल शरीर के होते है। ऐसे लोग काफी आकर्षक होते है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि व्यक्तित्व को भिन्न भिन्न मनोवैज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न प्रकारों में विभाजित किया है।